तकदीर का बयान |तिर्मेज़ी शरीफ

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी.

{01} तिर्मेज़ी रिवायत का खुलासा, रावी उबादा बिन सामित रदी.

रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फरमाया अल्लाह तआला ने सबसे पहले कलम को पैदा फरमाया, फिर उस कलम को लिखने का हुक्म दिया, कलम ने अर्ज़ किया ऐ रब्बुल आलमीन क्या लिखू? अल्लाह तआला ने फरमाया तकदीर लिखो, चुनांचे कलम ने उन चिझो को लिखा जो अब तक हो चुकी है और जो आईन्दा कियामत तक होने वाली है.

वज़ाहत - तकदीर पर ईमान लाना फर्ज़ है, इन्सान को पहूंचने वाली हर अच्छाई या बुराई उसके मुकद्दर मै लिखी हुई होती है, अलबत्ता अल्लाह तआला ने अक्ल व समझ की दौलत से नवाज़ कर इन्सान को नेकी और बदी दोनों के रास्ते वाज़ेह कर दिए है, नेकी का रास्ता

इख्तियार करने पर उसे अल्लाह तआला की रज़ा और इनाम व इकराम हासिल होता है, बुराई का रास्ता इख्तियार करने पर उसे सज़ा और अज़ाब मिलता है. अधिक मालूमात के लिए पढिए तर्जुमा व तफसीर सूरे कमर/49, दहर/3, बलद/8-10.

{02} तिर्मेज़ी रिवायत का खुलासा, रावी अब्दुल्लाह बिन उमर रदी.

रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم तशरीफ लाए, आपके हाथों मै दो किताबें थीं, आप صلی اللہ علیہ وسلم ने सहाबा से मुखातिब होकर फरमाया क्या तुम जानते हो की ये दो किताबें क्या है? हमने अर्ज़ किया की ऐ अल्लाह के रसूल! हमे मालूम नहीं, आप ही बता दीजिए, आप صلی اللہ علیہ وسلم ने दाएं हाथ वाली किताब के बारे मै फरमाया ये किताब रब्बुल आलमीन की तरफ से है जिसमे जन्नत मै जाने वालों के नाम, उनके बाप दादा और उनके कबीलों के नाम है और फिर आखिर मै इसे मुकम्मल कर दिया है,

लिहाज़ा इसमे कमी या ज़्यादती नहीं हो सकती, फिर आप صلى الله عليه وسلم ने बाएं हाथ वाली किताब के बारे मै फरमाया की ये अल्लाह तआला की तरफ से ऐसी किताब है जिसमे जहन्नम मै जाने वालों के नाम, उनके बाप-दादा और उनके कबीलों के नाम है, फिर आखिर मै इसे मुकम्मल कर दिया है, लिहाज़ा अब इसमे ना तो ज़्यादती हो सकती है और ना ही कमी.

ये सुनकर सहाबा किराम (रदी) ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! अगर ये चीज़ पहले ही से तै हो चुकी है तो फिर नेक अमल करने की क्या ज़रूरत है? आप صلى الله عليه وسلم ने फरमाया इस्लामी शरीअत के मुताबिक अपने आमाल को अच्छी तरह मज़बूत करो, अल्लाह तआला की निकटता हासिल करो इसलिए की जन्नत मै जाने वालों का खत्मा जन्नत वालों के आमाल पर होता है चाहे ज़िन्दगी मै उसने कैसे ही अमल किए हों, और जहन्नम मै जाने वालों का खात्मा जहन्नम वालों

के आमाल पर होता है चाहे उनके आमाल जैसे भी रहे हों, फिर आप ﷺ ने फरमाया तुम्हारे रब को पहले से ही मालूम है की एक जमाअत जन्नती है और एक जमाअत जहन्नमी.

{03} तिर्मेज़ी रिवायत का खुलासा, रावी अबू हुरैरह रदी.

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम (अलै) को पैदा फरमाया, उनकी कमर पर हाथ फेरा तो उससे वे तमाम रूहें निकल पडीं जिन्हें अल्लाह तआला ने कियामत तक पैदा फरमाना था, और हर आदमी की दोनों आँखों के दरमियान नूर की चमक को रोशन किया फिर उनको हज़रत आदम (अलै) के सामने पेश किया, हज़रत आदम (अलै) ने पूछा ऐ मेरे रब ये कौन है? अल्लाह तआला ने फरमाया ये तुम्हारी औलाद है, फिर हज़रत आदम (अलै) ने उनमे एक आदमी को देखा तो उसकी आँखों के

दरमियान नूर की चमक उन्हें बहुत अच्छी लगी.

हज़रत आदम ने पुछा ऐ मेरे रब ये कौन है? अल्लाह तआला ने फरमाया ये दाउद है. हज़रत आदम (अलै) ने अर्ज़ किया ऐ रब इसकी उम्र कितनी है? अल्लाह तआला ने फरमाया इसकी उमर ६० साल है, हज़रत आदम (अलै) ने अर्ज़ किया ऐ रब इसको मेरी उम्र मै से भी ४० साल अता फरमा दें, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया की जब हज़रत आदम (अलै) की उम्र खत्म होने मै ४० साल बाकी रह गए तो उनके पास "मलैकुल मौत" (मौत का फरिश्ता) आया, हज़रत आदम (अलै) ने पूछा की क्या मेरी उम्र के अभी ४० साल बाकी नहीं है? "मलेकुल मौत" ने कहा क्या आपने अपनी उम्र के ४० साल अपने बेटे दाउद को नहीं दिए थे, हज़रत आदम (अलै) ने भूल जाने की वजह से इन्कार कर दिया तो उनकी औलाद इसी वजह से कुछ चिझो का इन्कार कर देती है, हज़रत

आदम (अलै) ने भूलकर दरख्त का फल खाया तो उनकी औलाद भी भूलती है और हज़रत आदम (अलै) से गलती हुई तो उनकी औलाद से भी गलतियाँ होती है.

{04} तिर्मेज़ी रिवायत का खुलासा, रावी अबू मूसा अशअरी रदी.

रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फरमाया अल्लाह तआला ने हज़रत आदम (अलै) को तमाम ज़मीन से हासिल की गई मिट्टी की एक मुट्ठी से पैदा फरमाया, लिहाजा हज़रत आदम (अलै) की औलाद ज़मीन के मुताबिक पैदा हुई, चुनांचे इन्सानों मै बाज़े सुर्ख, सफेद, सियाह, और बाज़े दरमियाने रंग के है, बाजे नरम मिज़ाज, सख्त मिज़ाज है और बाजे पाक (मोमिन) और बाज़े नापाक (काफिर) है.

{05} तिर्मेज़ी रिवायत का खुलासा, रावी अनस रदी.

रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم कसरत के साथ ये दुवा फरमाते थे "या मुकल्लिबल कुलूबि सब्बित् कल्बी जला दीनिका"

तर्जुमा- ऐ दिलों के फेरने वाले मेरे दिल को अपने दीन पर कायम रखिए.
मैने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! हम आप पर ईमान लाए और आपके लाए हुए दीन और शरीअत पर भी ईमान लाए तो क्या अब भी आप हमारे बारे मै डरते है की कहीं हम गुमराह ना हो जाए आप ﷺ ने फरमाया बेशक दिल अल्लाह तआला की दो उंगलियों के दरमियान है, लिहाज़ा अल्लाह जिस तरह चाहता है दिलों को फेर देता है. "इसलिए इस दुआ को रोज़ाना हर नमाज़ के बाद मांगिये".

{06} तिर्मेज़ी रिवायत का खुलासा, रावी उमैर रदी.

मैने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! वे अमलियात जिन्हें हम शिफा के लिए पढते है और वे दवाएं जिन्हें सेहत को हासिल करने के लिए हम इस्तेमाल करते है और वे चिझे जिन्हें अपनी हिफाज़त के तौर पर हम इस्तेमाल करते है जैसे दम वगैरह क्या ये चिझे अल्लाह की तकदीर को बदल देती है? आप ﷺ ने फरमाया ये भी

अल्लाह की तकदीर के मुताबिक है.

वज़ाहत - बीमारी से शिफा के लिए दम करना या दवा इस्तेमाल करना या अपनी हिफाज़त के लिए ढाल वगैरह इस्तेमाल करना तमाम चिझे अल्लाह तआला की तकदीर के मुताबिक है, इसलिए की इन्सान की तकदीर मै उसी तरह लिखा होता है की अगर ये फलां इलाज करवाएगा तो इसे शिफा मिल जाएगी लिहाजा वो इलाज करवाने पर मरीज़ को शिफा मिल जाती है, इसलिए ये तमाम काम करें.

{07} तिर्मेज़ी रिवायत का खुलासा, रावी अब्दुल्लाह बिन अमर रदी.

रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फरमाया अल्लाह तआला ने अपनी मख्लूक जिन्नों और इन्सानों को शहवत व इच्छा वाले पैदा किया, फिर उन पर अपने नूर की रोशनी डाली, लिहाज़ा जिसको वो रोशनी मिल गई वो हिदायत पा गया और जिसको वो रोशनी नहीं मिली

वो गुमराही मै पडा रहा, इसलिए मै कहता हूं की अल्लाह की तकदीर पर कलम की तहरीर खुश्क हो चुकी है.

{08} तिर्मेज़ी रिवायत का खुलासा, रावी हज़रत अली रदी.

रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फरमाया कोई आदमी उस वकत तक मोमिन नहीं बन सकता जब तक की वो चार चिझो पर ईमान ना लाए,

१] वो इस बात की गवाही दे की अल्लाह के अलावा कोई हकीकी (वास्तविक) माबूद नहीं.

२] ये भी गवाही दे की मै अल्लाह का भेजा हुआ सच्चा रसूल हूं.

३] मौत और मरने के बाद दोबारा उठने पर यकीन रखे.

४] तकदीर पर ईमान रखे.

{09} तिर्मेज़ी रिवायत का खुलासा, रावी अब्दुल्लाह बिन उमर रदी.

रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फरमाया मेरी उम्मत मै पहली

उम्मतों की तरह जमीन मै धंस जाना और शक्लें तब्दील हो जाना भी होगा और ये अज़ाब उन लोगों को होगा जो तकदीर को झुठलाने वाले है. "ऐ हमारे रब तू हमे उन लोगों मै शामिल ना फरमाए".

{10} तिर्मेज़ी रिवायत का खुलासा, रावी मतर बिन उकामिस रदी.

रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फरमाया जब अल्लाह रब्बल इज़्ज़त किसी आदमी के बारे मै फैसला फरमाते है की वो फलां इलाके मै मौत पाएगा तो अल्लाह तआला उसको उस इलाके की तरफ ले जाने का कोई सबब बना देते है.

एक हज़ार मुन्तखब हदीसे मिश्कात शरीफ हिन्दी.